वृष्णीनाम् =वृष्णिवांशियों में; **वासुदेवः** =वसुदेवपुत्र कृष्ण; **अस्मि** =(मैं) हूँ; **पाण्डवानाम्** =पाण्डवों में; **धनंजयः** =अर्जुन; **मुनीनाम्** =मुनियों में; **अपि** =भी; **अहम्** = मैं (हूँ); **व्यासः** =सम्पूर्ण वैदिक शास्त्रों का संकलनकर्ता व्यास; **कवीनाम्** = मनीषियों में; **उशना** =उशना; **कविः** =तत्त्ववेत्ता।

अनुवाद

वृष्णिवंशियों में मैं वासुदेव हूँ और पाण्डवों में अर्जुन हूँ तथा मुनियों में वेदव्यास और कवियों में उशना (शुक्राचार्य) हूँ।।३७।।

तात्पर्य

श्रीकृष्ण आदिपुरुष स्वयं भगवान् हैं और वासुदेव उनके स्वयंप्रकाश हैं। भगवान् श्रीकृष्ण एवं बलराम दोनों वसुदेवजी ने पुत्ररूप में प्रकट होते हैं। पाण्डवों में अर्जुन सर्वाधिक प्रख्यात और शूरवीर हैं। नरोत्तम होने के कारण वे श्रीकृष्ण के ही स्वरूप हैं। वैदिक ज्ञान के विज्ञ मुनियों में व्यासदेव सबसे महान् हैं; उन्होंने वैदिक ज्ञान का नाना प्रकार से वर्णन किया, जिससे इस कलियुग के मनुष्य भी उसे समझ सकें। व्यासदेव श्रीकृष्ण के अवतार हैं, इसलिए भी श्रीकृष्ण के रूप हैं। जो मनुष्य किसी विषय का सूक्ष्मार्थ विवेचन कर सकते हैं, उन्हें 'कवि' कहा जाता है। उशना (शुक्राचार्य) नामक कवि दैत्यों के गुरु थे। राजनीतिक और आध्यात्मिक दृष्टि से सर्वतः परम बुद्धिमान् और दूरदर्शी होने के कारण श्रीकृष्ण की विभूतियों में उनकी गणना की गयी है।

दण्डो दमयतामस्मि नीतिरस्मि जिगीषताम्।
मौनं चैवास्मि गुह्यानां ज्ञानं ज्ञानवतामहम्।।३८।।

दण्डः =दमनशक्ति; **दमयताम्** =दमन करने वालों की; **अस्मि** =(मैं) हूँ; **नीतिः** =नीति; **अस्मि** =(मैं) हूँ; **जिगीषताम्** =विजेताओं की; **मौनम्** =मौन; **च** =तथा; **एव** =भी; **अस्मि** =(मैं) हूँ; **गुह्यानाम्** =गोपनीयों का; **ज्ञानम्** =तत्त्वज्ञान; **ज्ञान-वताम्** =ज्ञानियों का; **अहम्** =मैं (हूँ)।

अनुवाद

मैं दण्ड करने वालों का दण्ड हूँ और विजय की इच्छा वालों की नीति हूँ; गोपनीय भावों में मौन तथा ज्ञानियों का ज्ञान मैं हूँ।।३८।।

तात्पर्य

विविध प्रकार के दमनकारी तत्त्वों में उनका सबसे अधिक महत्त्व है, जो दुष्टों का नाश करते हैं। दुष्ट-दमन के लिये प्रयुक्त दण्ड श्रीकृष्ण का रूप है। किसी भी क्रियाक्षेत्र में विजय के अभिलाषियों में रीति की ही अन्तिम विजय होती है। सुनना, सोचना, मनन करना आदि गोपनीय क्रियाओं में मौन सबसे महत्त्वपूर्ण हैं, मौन से अतिशीघ्र उन्नति होती है। ज्ञानी वह है, जो जड़ प्रकृति और आत्मा में तथा श्रीभगवान् की परा और अपरा शक्तियों में भेद को जानता हो। यह ज्ञान साक्षात् श्रीकृष्ण का स्वरूप है।